

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 24/07/2016

● अंक - 595 ● तारीख - 25 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण - 06 ● सोमवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया

● पृष्ठ - 01

सत्यसाई बाबा (अनमोल वचन)



ऐसा स्वभाव डालो कि प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में जग जाया करो अर्थात 3 बजे प्रातः शैया पर उठ बैठो।

रामचरितमानस - श्लोक

राम करहु सब संजम आजू
जौ बिधि कुसल निबाहै काजू
गुरु सिख देइ राय पहिं गरजऊ
राम हृदयँ अस बिसमउ भयऊ।

भावार्थ—(इसलिए) हे रामजी! आज आप (उपवास, हवन आदि विधिपूर्वक) सब संयम कीजिए, जिससे विधाता कुशलपूर्वक इस काम को निबाह दें (सफल कर दें)। गुरुजी शिक्षा देकर राजा दशरथजी के पास चले गए। श्री रामचन्द्रजी के हृदय में (यह सुनकर) इस बात का खेद हुआ कि—

जन्मे एक संग सब भाई
मोजन सयन केलि लरिकाई
करनबेध उपबीत बिआहा।
संग संग सब भए उछाहा।

भावार्थ—हम सब भाई एक ही साथ जन्मे, खाना, सोना, लड़कपन के खेल-कूद, कनछेदन, यज्ञोपवीत और विवाह आदि उत्सव सब साथ-साथ ही हुए।

बिजली महादेव मंदिर



कुल्लू से 14 किमी. दूर पहाड़ी पर बना यह मंदिर यहां का प्रमुख धार्मिक स्थल है। मंदिर तक पहुंचने के लिए कठिन चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। यहां का मुख्य आकर्षण 100 मी. लंबी ध्वज (छड़ी) है। इसे देखकर ऐसा लगता है मानो यह सूरज को भेद रही हो। इस ध्वज (छड़ी) के बारे में कहा जाता है कि बिजली कड़कने पर इसमें जो तरंगे उठती हैं वे भगवान का आशीर्वाद होता है। इस ध्वज पर लगभग हर साल बिजली गिरती है। कभी-कभी मंदिर के अन्दर शिवलिंग पर भी बिजली गिरती है जिस से शिवलिंग खंडित हो जाता है। पुजारी खंडित शिवलिंग को मक्खन से जोड़ते हैं जिस से शिवलिंग फिर सामान्य हो जाता है। इस मंदिर से कुल्लू और पार्वती घाटी का खूबसूरत नजारा देखा जा सकता है।

क्या आपश्री जानते है?

- 'फाह्यान एक चीनी यात्री था, यह गुप्त नरेश चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में आया था।
- 'हेन्सांग एक चीनी यात्री था जो हर्षवर्धन के शासन काल में भारतीय राज्य कपिशा आया था।
- 'यह नालंदा विश्व विद्यालय में अध्ययन करने एवं बौद्ध ग्रंथों को एकत्र कर ले जाने के लिये आया था।

दुनिया की सबसे छोटे चिप में समा जाएंगी अब तक लिखी सारी किताबें



छोटे चिप में समा जाएंगी अब तक लिखी सारी किताबें नीडरलैंड के वैज्ञानिकों ने दुनिया का सबसे छोटा हार्ड डिस्क बनाने का दावा किया। हार्ड डिस्क की दुनिया में वैज्ञानिकों ने हाल ही एक और चमत्कार कर दिखाया है। नीडरलैंड के वैज्ञानिकों ने दुनिया का सबसे छोटा हार्ड डिस्क बनाने का दावा किया है। सिंगल क्लोरीन एटम पर आधारित डाक टिकट के आकार वाले इस डिस्क में अब तक लिखी गई सारी किताबों को स्टोर किया जा सकता है। मौजूदा समय में हर दिन एक अरब गीगाबाइट से ज्यादा नए आंकड़ों का सृजन हो रहा है। इतनी बड़ी मात्रा में डाटा को स्टोर करने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक बिट जितना संभव हो सके उतना कम स्थान ले।

कई मौकों पर बेहतर होता है चुप रहना



कितनी ही बार हम गुस्से, तनाव और दबाव की स्थितियों में अपने दोस्तों और अधीनस्थों को चुप रहने के लिए कहते हैं। यहाँ तक कि अपने बॉस को भी मन की मन कोसने से नहीं चूकते। कितनी ही बार खुद भी यह कामना करते हैं कि काश अमुक समय पर हम चुप रह गए होते। शटअप का यह शब्द हमारी निजी और प्रोफेशनल जिंदगी से काफी गहराई से जुड़ गए हैं। यहाँ कुछ ऐसे ही मौके दिए गए हैं जहाँ स्थिति को ध्यान में रखते हुए चुप रहना अपने लिए अच्छा रहता है। बॉस से बातचीत : यह जरूरी नहीं कि आपका बॉस हर समय सही हो पर उसके बावजूद बॉस के कहने के तरीकों को समझकर कई बार चुप रहना बेहतर होता है। ऐसी स्थिति में कुछ समय बाद बॉस के मूड को देखकर आप विषय को चतुराई के

साथ पेश कर सकते हैं यदि आपको अपने बॉस के हठी स्वभाव के विषय में पहले से पता है तो बेहतर है कि आप दोबारा इसका जिक्र न करें। पर यदि आप विषय से बहुत अधिक असंतुष्ट हैं तो उच्च अधिकारी से बात कर सकते हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं कि इसका सकारात्मक परिणाम ही हासिल हो। बातूनी कर्मचारी : आपके आसपास कई ऐसे कर्मचारी होते हैं जो कि बहुत बोलते हैं। दूसरों की सुविधा के बारे में बिना सोचे अपनी ही बात बोलते रहते हैं। मीटिंग के बीच या व्यस्त समय में उनका यह स्वभाव कई बार झुंझलाहट उत्पन्न करने वाला या समय का दुरुपयोग साबित होता है। ऐसे सहकर्मियों को चुप रहने के लिए कहना हो सकता है कि आपको राहत प्रदान करे पर यह निश्चित ही उनकी नजरों में आपकी छवि को नकारात्मक बना देगा। यदि आपको लगता है कि ऐसे कर्मचारी अपनी सीमाओं से आगे जा रहे हैं, तो बेहतर है कि बातचीत को उस समय रोक दिया जाए या फिर आप कुछ समय के लिए वहाँ से हट जाएं। जब नहीं से काम न हो : कुछ लोग एक बार न कहने पर वह नहीं समझते। वह अपनी ही बात पर लगातार टिके रहते हैं। ऐसी स्थिति में दूसरे तरीके अपनाना बेहतर होता है। बजाय इसके कि आप उन्हें न कहें, बेहतर होगा कि आप विषय बदल दें।

घरेलू उपाय से कमर-दर्द दूर करें

कमरदर्द की कष्टप्रद बीमारी अनेक लोगों को होती है। इस बीमारी को टालने हेतु हमें कुछ बातों का ध्यान रखना होगा इस हेतु कुछ मुद्दों का ध्यान रखें। पीठ और कमर की योग्य स्थिति, योग्य पोषण और व्यायाम कमर के स्वास्थ्य हेतु त्रिसूत्री है। बैठकर काम करने वालों को कमर दर्द हो सकता है। जैसे की संगणक पर काम करना। ऐसे काम करते समय घुमने वाली कुर्सी, पीठ व गर्दन को सही आधार और पैरों के लिये टेबल के नीचे डंडे का आधार आवश्यक है। काम करते समय बीच-बीच में उठकर कुछ मिनट तक मांसपेशियोंका तनाव कम करे। खेलते हुए कमर-पीठ को



और उलटी-सीधी घुमाना, उसी प्रकार कमर झुकाने और घुमाने के हल्के व्यायाम करना चाहिये इससे वहाँ के स्नायू, जोड़ स्नायूबंध और हड्डियाँ निरोगी रहती हैं। वजनी या भारी वस्तु उठाते समय शरीर के पास से उठाएँ, दूर से नहीं उसी प्रकार रीढ़ को सीधा रखने की कोशिश करें अधिक भार की अपेक्षा आप भार कैसे उठाते है और शरीर का उपयोग कैसे करते है,

मानव मन के बोल



बाधाओं के भीतर ही तो कार्यसिद्धि करती है वास

गतांक से आगे...

बाधाओं के भीतर ही तो कार्यसिद्धि करती है वास

अच्छी-अच्छी बातें रिकॉर्ड करता था। ताकि मैं अच्छी-अच्छी बातें सुन सकूँ। हमारे राम जी दूसरे दिन व्याख्यान में चल गये तो टेप रिकॉर्डर सामने रख दिया। बटन दबा दिया सेल चलते थे। उसमें, हमने कहा महाराज जी का व्याख्यान रिकॉर्ड हो जायेगा। दो-चार बार सुनेंगे तो कितना अच्छा लगेगा। कितना अच्छा बोलते हैं। आधे-पौन घण्टे बाद एक भाई आए। इशारा किया थोड़ा बाहर आपको कोई बुला रहे हैं। मैंने कहा ठीक है कोई बाहर बुला रहा है तो चले जाते हैं। बोले अपना टेप भी साथ ले लो रिकॉर्डर भी ले लो बेग भी ले लो और बाहर चलो। बाहर जाते ही घेर लिया 5-10 लोगों ने अरे आप हमारी जासूसी कर रहे हो। अरे, भैया हम आपकी क्या जासूसी करते? हम इसके लिए पैदा ही नहीं हुए। हम पैदा हुए भूखे को रोटी खिलाने के लिए, हम पैदा हुए किसी गरीब के तन पर जिसके वस्त्र नहीं हैं—उसको वस्त्र पहनाने के लिए। हमें भगवान ने जन्म दिया है, किसी का सिर दर्द हो रहा है, तो उसके माथे पर थोड़ा बाम लगा देवे। देख लो भाई उस समय हमारे पूज्यवर और साथ में थे। उनका मैं बड़ा आदर करता हूँ। बहुत कृपा हैं उनकी—बहुत कृपा। उनका मैं जीवन भर 10 जन्म ले लूँ, 50 ले लूँ तो ऋण नहीं चुका सकता। उनको भी लगा ये क्या हो गया? मन में तकलीफ हुई—उनको भी। कैलाश जी का थैला छीन रहें हैं। रसीद बुक निकाल कर इधर-उधर कर दी। सेवा संदीपन पत्रिका को इधर-उधर कर दिया, और क्या हैं बताओ? अरे! एक आदमी बोला मेरे 1100 रुपये वापिस दो। कल मैं 1100 रु. दिए अरे भैया वापिस ले लो। मैं क्या मेरा कमीज ले लो मेरी धोती ले लो। मेरा क्या है? मैं तो कुछ लेके आया ही न था। हम तो किराये के मकान में रहते हैं भाई। गिरवी की हवेली में रहते हैं। तो ये 1100 रुपए ले लो वापिस। फिर लोगों ने कहा आपने टेप क्यों किया? मैंने कहा ये टेप ये कैसेट आप ले ई लोनी मारे काई करना कैसेट रो। मेरे तो गुरुजी के व्याख्यान अच्छे लगे मैंने सोचा 2-4 बार और सुनूँगा नहीं आप हमारी जासूसी करने आये थे, हम आपकी क्या जासूसी करेंगे? आप तो अच्छा काम कर रहे हो। आप तो सत्संग में आये हो। जोश के साथ होश रखिए, व्यक्ति को पहचानिए। फिर एक दो महानुभाव मिले। आपको ऐसा नहीं करना चाहिए आप गाड़ी में बैठो। पधार जाओ। हमारे साथ बड़े आदरणीय थे वो भी बैठे। मैं धन्यवाद देता हूँ हमारे ड्राईवर सा. को। राजेन्द्र जी वैष्णव को बहुत धन्यवाद देता हूँ। उस समय ये भी थे। चारों तरफ टेलीफोन कर दिए और बोला कि फलाणा आदमी आये तो चंदा मत देना। मत दो भाई। दे ओ मत दे ओ यार भगवान का काम है। नहीं देओगे तो नहीं करेंगे हमारे क्या हैं? नही खिलाएंगे रोटी गरीब को, नहीं बनाएंगे सत्तु तेज स्पीड से गाड़ी चलाई। d Mhñfepñv/kt k hgñjyluker A nñk, d nksfõu çp eñgñ kmVkgesfõ' ok A çk/kv ksd shñr j ghr kñd k ñ) hñ jr hgSok AA उस समय भी मैं नहीं घबराया। हमारे साथ वालों ने कहा बाबूजी, आज ये क्या हो गया? मैंने कहा रोज अपने को भगवान कितना बढ़िया खिलाता हैं, दो-दो सब्जियाँ आ जाती हैं। रोटी चुपड़ी भी आ जाती हैं। तो आज हमने जो मिर्ची खाई वो ज्यादा कड़वी थी। चिंता मत करना, शाम को उनको लगा कि भाई गलती हो गई है। कैलाश जी तो बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। उनकी तो नारायण सेवा नाम की उदयपुर में एक संस्था है। एक सेवादाम की बिल्डिंग बनी हुई है। पास में एक प्लॉट पड़ा उसको विकलांगों के लिए हॉस्पिटल बनाने की तैयारी चल रही है। हमने कहा भैया आप साफ करो हमारे पर क्यों शंका करते हो? हम ऐसे लोग नहीं हैं। सब कुछ हमारा खुला है, कोरा कागज है।

कमशा: आगले अंक में...

सम्पादकीय

समय अपनी गति से निरन्तर चल रहा है या यह कहे कि वह तेज गति से भाग रहा है। निरन्तर गतिमान इस समय के साथ कदम मिलाकर चलने पर ही मानव जीवन की सार्थकता है। इसके साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चलने वाला व्यक्ति पिछड़ जाता है। पिछड़ना सफलता से दूर हटना है, उसकी ओर गतिशील होना नहीं।

जीवन में वही मनुष्य सफल है, जो समय के साथ चलता है। कुछ लोग तो ऐसे दूरदर्शी होते हैं, जो अपने आने वाले समय को पहले ही भाँप लेते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी योजना पहले ही बना लेते हैं तथा प्रत्येक कसौटी पर सफल होते हैं। मनुष्य को समय के साथ आगे बढ़ते हुए अपना काम पूरा करते रहना चाहिए। कल के भरोसे काम को छोड़ना समस्याओं को आमंत्रित करना है। जिस व्यक्ति ने समय की उपयोगिता को समझ लिया है, वह सफलता को अवश्य हासिल करता है।

प्रत्येक मनुष्य को अपनी दिनचर्या की समय सारिणी अथवा तालिका को बनाकर उसका पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए। जिस व्यक्ति ने अपने समय का सही उपयोग करना सीख लिया, उसके लिए कोई कार्य असंभव नहीं है। कुछ लोगों को अकर्मण्य रहकर निठल्ले समय बिताना अच्छा लगता है। वे अकर्मण्यता और आलस्य को समय की कमी के बहाने छिपाते हैं।

समय को जिन्दगी के समान माना गया है, कहते हैं कि अगर आप समय को बर्बाद कर रहे हैं तो जिन्दगी को बर्बाद कर रहे हैं, अगर आप समय का अच्छा प्रयोग कर रहे हैं तो अपनी जिन्दगी को अच्छा बना रहे हैं।

समय को भगवान की बनाई हुई इस सृष्टि में सबसे बलवान माना गया है, जब ये बदलता है तो इंसान को राजा से रंक और रंक से राजा बना सकता है। व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जिनसे उसके भाग्य का बनना और बिगड़ना तय होता है। अगर व्यक्ति ने समय की सही दिशा या गति को समझ लिया, तब तो वह सफल हो गया, अन्यथा उसके हाथ केवल असफलता ही लगेगी।

प्रकृति में प्रत्येक वस्तु का समय निश्चित है। यदि प्रकृति भी आलसी और अकर्मण्य लोगों की भांति कार्य करना बन्द कर दे तो सम्पूर्ण सृष्टि का समय चक्र बदल जाएगा तथा प्रकृति विनाश की ओर आरूढ़ हो जाएगी। यदि विद्यार्थी केवल परीक्षा के समय परिश्रम करेगा और शेष दिन आराम करेगा तो उसे वांछित सफलता नहीं मिल सकती। अतः हम कह सकते हैं कि मानव जीवन का सबसे बड़ा नियामक घटक समय ही है।

सफल आदर्श जीवन हेतु जरूरी बातें

- रिश्तों में रिसाव शुरू न होने दें। मालूम होते ही रिसाव रोके, अन्यथा टूटते देर नहीं लगेगी। प्रेम करुणा, वात्सल्य एवं संस्कार के साथ रिश्तों की डोरी मजबूत करते रहें।
- खुशी उसी परिवार में आती है, जहाँ परिवार एकजुट होता है। समन्वय, स्नेह, प्रेम व आत्मीयता से एक जुटता को सींचते रहने से परिवार निरन्तर प्रगति प्राप्त करता रहता है।
- कुछ रचनात्मक करने के लिए अपने व्यक्तियों की अच्छी बातों के लिए प्रोत्साहित करें।
- अन्यायपूर्वक धन अर्जन नहीं करके अपनी जरूरतों में कमी करनी चाहिए तथा ईमानदारी से धन प्राप्ति के स्रोत बढ़ाने चाहिए।
- सुख, दुःख आते जाते रहते हैं। दुःख के समय में कर्मनिष्ठ बनकर कार्य करते रहें, सुख को आना ही पड़ेगा। जब सुख मिलने लगे तो बहकें नहीं। इतराये नहीं। फूले नहीं। सहज सरल स्थिति में रहकर अपने सुख से सभी को सुखी करने के प्रयास करें।
- कच्चे मन से सफलता नहीं मिल सकती। मन को पक्का व सच्चा बनाईए।
- मानव का जीवन विचारों का प्रतिबिंब होता है, नीच विचार मनुष्य को पतन की ओर तथा उच्च विचार उन्नति की ओर ले जाते हैं। अतः विचारों की उच्चता बनाए रखें।
- स्वार्थपरता, निर्दयता, कुटिलता, कायरता व झूठ अपनाकर आप जीवन में कभी प्रगति नहीं कर सकते।
- शिष्टता, विनम्रता व मधुरता जीवन में विकास के द्वार खोल देती है।
- आत्मविश्वास को कभी समाप्त न होने दें। कार्य करने से पूर्व रूपरेखा बनाएं और पूरे आत्मविश्वास के साथ उस कार्य को करने में लग जाएं।
- विवाद के हल की दिशा में दिमाग लगाएँ, अनावश्यक सोचते रहने से कभी समाधान नहीं निकला करता।

800 स्कूल ड्रेस का निःशुल्क वितरण



उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से बुधवार को ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सामग्री व स्कूल गणवेश का वितरण किया गया। निदेशक वदना अग्रवाल ने बताया कि भीण्डर के आसपास के क्षेत्र में स्कूली बच्चों को 800 गणवेश का वितरण किया गया।

बुखार बीमारी नहीं बल्कि बीमारी का लक्षण



बुखार खुद एक बीमारी नहीं, केवल किसी बीमारी का लक्षण है। बीमारी का निदान हो तो तब असली उपचार संभव है। अक्सर हम इस लक्षण का ही उपचार करते हैं। याद रखें कि हमें केवल बुखार का इलाज ही नहीं करना है परन्तु उसके कारण का भी इलाज करना है। इसके लिए कई सारी चीजें करनी पड़ती हैं जैसे कि रोगाणु नाशक दवाएं देना, फोड़े में से मवाद निकालना, जखम को

साफ करके उसकी मरहम पट्टी करना आदि। कभी-कभी हल्का बुखार होता है या फिर वायरस के संक्रमण के कारण होता है।

पहली स्थिति में ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं होती। और दूसरी स्थिति में जीवाणु नाशक दवाएं काम नहीं करती। अगर ज्यादा बुखार कम करना हो तो गीले कपड़े से बदन पोंछने से फायदा होता है। आपको ध्यान रखना चाहिए कि बुखार किसी भी संक्रमण से निपटने के लिए शरीर का एक आवश्यक तरीका है। इसलिए ज्यादातर मामलों में हल्का बुखार उपयोगी ही होता है। और हर मामले में बुखार कम करना ही उद्देश्य नहीं होता। पर अगर बुखार ज्यादा तेज हो और

इससे किसी बच्चे में झटका की स्थिति बन रही तो बुखार कम करने के लिए इलाज करना जरूरी होता है।

ज्यादातर मामलों में गीले कपड़े से बदन पोंछना उपयोगी होता है। यह एक जाँचा हुआ घर में इलाज का तरीका है। कपड़ा गीला करने के लिए ठण्डा पानी इस्तेमाल न करें, इससे व्यक्ति को कंपकपाहट होगी। गीले कपड़े से पोंछने से वाष्पन द्वारा शरीर की गर्मी बाहर निकल जाती है। इसी से बुखार कम होता है। इसलिए पानी का ठण्डा होना जरूरी नहीं होता बुखार आने पर ज्यादा देर न करें तुरन्त डॉक्टर की सलाह लें।



सादर आमंत्रण

दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दिताओं की सेवा में सतत सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायताार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्री दुर्गा मन्दिर ट्रस्ट, शाहदरा (दिल्ली)

दिनांक एवं समय

24 से 30 जुलाई, 2016

दोपहर 3 बजे से सांय 7.00 बजे तक

मुख्य यजमान : श्री श्याम कुमार (एंडवॉकेंट) रामनगर

स्थान : श्री दुर्गा मन्दिर, बी - 85, ज्योति कॉलांनी,
मन दुर्गापुरी चौक, शाहदरा (दिल्ली - 32.)

कथा व्यास: पुज्य दयालु जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करावेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार ईष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र: 9891184382, 9312046346

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःश्वतजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

 <p>कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान</p>	 <p>वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>	 <p>जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>	 <p>देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान</p>
--	---	---	---



मुस्कान मानवता की

Manoj Kumar Singh

कर्म ही पूजा है

ये रौब मत बताइये। मैं आज दिन तक बीमार नहीं पड़ा। मैं सुन रहा था, मैंने रजिस्ट्री तो उनको दिला दी। वो जब चले गये तो मैंने उस भैया को कहा - लाला, आपने जो भी किया, वो गलत है। हमें ऐसा नहीं बोलना चाहिये कि मैं कभी बीमार नहीं पड़ा। बोले-कैलाश जी, वास्तव में आज तक मैं कभी बीमार नहीं पड़ा, आज तक मैंने कोई दवाई-गोली नहीं ली। अच्छी बात है, प्रभु कृपा करे आपको आगे भी दवा की जरूरत ना पड़े, लेकिन गर्व मत करो। ये साढ़े तीन हाथ की काया, ऐसा बर्तन है जो कभी भी टूट सकता है, ये काँच का बर्तन है।

10-15 दिन बाद वो कुछ टेबलेट खा रहे थे। मैंने कहा क्या हुआ? भाई साहब, खॉंसी बहुत हो रही थी और मैं दो-तीन बार डॉक्टर के पास गया, सिरप ने भी काम नहीं किया। गोली भी लेता हूँ और सिरप भी लेता हूँ। मैंने कहा-थोड़ा अदरक और नीम्बू को काट करके लो। बाद में उनकी खॉंसी बढ़ गई, महीने भर बाद मालूम पड़ा उनको टी.बी. हो गई है। 9 महीने तक दवायें लेते रहे। क्या गर्व करते हैं? किस बात का गर्व करते हैं? ये धन, लक्ष्मीजी भी चंचल हैं कभी लक्ष्मी जी आपके बंगले पर बिराजने की कृपा करती हैं, कभी आपसे रूठ जायेगी तो कुछ नहीं रहेगा। हमने तो देखा है, कभी गर्व मत कीजिये। लक्ष्मी जी के कई स्वरूप हैं- रोटी, कपड़ा, मकान एक स्वरूप, दाल-रोटी खायें, प्रभु के गुण गायें। यदि बाहर कोई बारिश में भीग रहा हो तो अपने छाते के नीचे उसे शरण दे दीजिये। सन्तोष रूपी धन को रखिये, लक्ष्मीजी का दूसरा स्वरूप सन्तोषी सदा सुखी। लालची मत बनिये। पाप का बाप लोभ, लोभी मत बनिये, ये लोभ का पूरा परिवार होता है, लोभ जब पूरा नहीं होता है तो गुस्सा आता है।

गुस्सा आता है तो मति भ्रम हो जाता है, मति भ्रम हो जाता है तो स्मृति नष्ट हो जाती है और स्मृति नष्ट हो जाती है तो आदमी नष्ट हो जाता है। किसके लिये करें? क्यों करें? दाल-रोटी ईमानदारी से खूब मिल जाती है। सरकारी नौकरी में भी साल का 8/- रुपया इन्फ्रीमेंट लगता था। इन्तजार करते थे कि कब 31 दिसम्बर आये 8/- रुपया बढ़े, 8/- रुपया बहुत प्यारा लगता था। उन्हीं दिनों मैं रोहट गया एक डेपुटेशन पर, पोस्ट ऑफिस में कहीं सिंगल हैंडेड पोस्ट ऑफिस में। वोही बैंक खोलेगा, वो ही डाक छाँटेगा, एक पोस्टमैन भी होता है। उनके पास। सिंगल हैंडेड सब, पोस्टमास्टर घर से चाबी लायेगा, पोस्ट ऑफिस खोलेगा। एक पोस्टमैन ए.डी.डी.ओ. होता है। जहाँ डबल पोस्ट ऑफिस होता है वहाँ एक्सट्रा डिपार्टमेंटल, तो रूठ वाले ने छुट्टी की एप्लीकेशन दी, सुपरवाइजर साहब ने उनकी छुट्टी स्वीकृत कर दी। हमारे पोस्ट मास्टर साहब को लिख दिया कि इतनी तारीख से इतनी तारीख तक लोड भेजिये।

उस समय 6 रुपया टी.ए.डी.ए. मिलता था, बहुत प्यारा लगता था 6 रुपया और आठ दिन के लिये जायेंगे तो 48 रुपये मिलेंगे। कमला जी को कहा - कमला जी बहुत गुणी, बहुत सद्भावी, बहुत आज्ञा पालन करने वाली, सद्चरित्र। कमला जी उस समय सिलाई करती थी, क्योंकि पीहर में गोपी-किशन जी की रेडिमेड कपड़ों की दुकान थी, उनकी हमारे पर बहुत कृपा है। उन्होंने कमला जी को छोटेपन से ही सिलाई सिखवा दी थी, ये सिलाई स्कूल में भी गई थी। कपड़े बनाने में एक्सपर्ट, हाथ की मशीन थी उस समय। हमारे पास पैसा भी बहुत कम था, मशीन खरीदनी पड़ती है, पैर की मशीन के पैसे भी ज्यादा लगते हैं। हाथ की मशीन को माथे पर लिया, उस समय कल्पना की मैंने अँगुली पकड़ी, प्रशान्त को गोद में लिया, एक-दो बैग चारों तरफ लगाये और हम रोहट चले गये। जहाँ पर खूब आनन्द से प्रेमपूर्वक कार्य किया। प्रेमपूर्वक कार्य करने में खूब आनन्द आता है, आज भी आनन्द आता है। कार्य तो पूजा है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी संपादन सहयोगी-वल्लभश्याम सिंह राठौड़